प्रातः क्लास 19/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे–मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं तुमको अभी स्मृति आई है हम आदि सनातन देवी–देवता धर्म के थे। हम राज्य करते थे। बच्चों को स्मृति आई ना हम बरोबर विश्व के मालिक थे। और दूसरा कोई धर्म नहीं था यह स्मृति आई ना मीठे–मीठे बच्चों को। आत्मा की बुद्धि में ज्ञान रहता है ना। बरोबर हम सतयुग से लेकर पुनर्जन्म लेते हैं, 84 का चक्र पूरा किया। सारे झाड़ स्मृति तुमको आई ना। हम ही देवी–देवता धर्म के थे फिर रावण राज्य में आ गये। अपने को हम देवी–देवता कहलाने के लायक नहीं रहे हैं। इसलिए धर्म ही दूसरा हिन्दू समझ लिया। और किसका भी धर्म बदलता नहीं है। जैसे क्रिश्चियन का क्रिश्चियन धर्म, बौद्धियों का बुद्ध धर्म की चला आता है। सभी की बुद्धि में है बुद्ध ने फलाना टाइम धर्म स्थापन किया। हिन्दुओं को अपने धर्म का पता ही नहीं है। हमारा हिन्दूधर्म कबसे शुरू हुआ, किसने बनाया। लाखों वर्ष कह देते हैं। अभी तुमको स्मृति आई। हम सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी 2500 वर्ष राज्य किया। फिर वैश्य, शूद्र वंशी बने। स्मृति आई ना। यह है नई बातें। सारी सृष्टि चक्र का नॉलेज तुम बच्चों को ही है। इसको ही कहा जाता है ज्ञान–विज्ञान। नाम भल रखा है; परन्तु बाप इनका अर्थ समझाते हैं। ज्ञान और योग। रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त का ज्ञान। जो और कोई नहीं जानते। अभी तुम समझते हो हम भी नहीं जानते थे। नास्तिक थे। यह भी अभी स्मृति में आया है ना। भक्तिमार्ग में तो कलियुग की आयु ही लाखों वर्ष कह देते। यह सभी हैं भक्तिमार्ग के गपोड़े। यह गपोड़े फिर भी चलेंगे। स्मृति में आया ना। सतयुग में तो यह ज्ञान हो नहीं सकता। तुमको टीचर ने पढ़ाया राज–भाग ऊँच पद मिला। बस। क्योंकि तुमको रहने के लिए भी नई सृष्टि चाहती थी। पुरानी सृष्टि पर तो देवताएँ पैर रख न सकें। तो बाप ने आकर तुम्हारे लिए पुरानी दुनिया का विनाश कराये नई दुनि(या) स्थापन की है। अभी स्मृति में आया हमारे लिए विनाश जरूर होना है। कल्प–कल्पान्तर हम यह पार्ट बजाते आये। बाप पूछते हैं आगे कब मिले हो? तो कहते हैं बाबा हर कल्प मिलते हैं आप से राज–भाग लेने। कल्प पहले भी बेहद के सुख का राज–भाग मिला था। अभी स्मृति में आया ना। जो स्मृति आया है उनका फिर सिमरण होना चाहिए। जिसको बाबा स्वदर्शनचक्र कहते हैं। आत्मा को अभी सभी बातों की स्मृति आई। हम पहले सतोप्रधान थे। हरेक आत्मा को अपना–अपना पार्ट मिला हुआ है ना। हम आत्मा बिल्कुल छोटी अविनाशी हैं। उनमें पार्ट भी अविनाशी है जो चलता ही रहेगा। बनी बनाई बन रही..... इसमें नई बात कोई एड वा कट.... नहीं सकती। न कोई मोक्ष को पा सकता है। कोई मुक्ति मांगते हैं ना। मुक्ति अलग है, मोक्ष अलग है। यह भी स्मृति में रखना है। स्मृति होगा तब औरों को स्मृति में लावेंगे। तुम्हारा धंधा ही यह है। बाप ने जो स्मृति में लाया है वह फिर औरों को समझाना है तब ही ऊँच पद पा सकेंगे। ऊँच पद पाने लिए बहुत मेहनत करनी है। मुख्य मेहनत है योग की। यह है याद की यात्रा। जो बाप के सिवाय और कोई सिखाये न सके। तुम मनुष्य से देवता बनने यह पढ़ते हो। यह भी स्मृति में है। हम फिर नई दुनिया में जावेंगे। उनका नाम ही है अमरलोक। यह है मृत्युलोक। अचानक बैठे–2 मौत हो जाता। वहाँ तो मृत्यु का नाम निशान नहीं। आत्मा को वास्तव में कोई काल खाता नहीं है। कोई मिठाई की चीज़ थोड़े ही है। आत्मा खुद कहती हैं मैं एक शरीर छोड़ भागता हूँ दूसरे में। ड्रामा अनुसार जब समझ होता है तो आत्मा चली जाती है। ड्रामा बिगर तो कुछ होता नहीं। जिस समय जिसको जाना है वह चला जाता है। काल कोई पकड़ता नहीं है। आत्मा एक शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेती है। बाकी काल खाने की बात नहीं। यह सभी भक्तिमार्ग के फालतू बातें हैं जिसकी कथाएँ बना दी हैं। बाकी काल कोई चीज़ नहीं है। अभी तुम बच्चों को स्मृति आई ना। वह है अमरलोक। निरोगी काया रहती है। सतयुग में भारत की आयु भी बड़ी थी, योगी थे। योगी और भोगी का फर्क भी अभी मालूम पड़ा है। तुम्हारी आयु वृद्धि को पा रही है। जितना तुम योग में रहेंगे उतना ही पाप भस्म होंगे। और पद भी ऊँच मिलेगा। आयु बड़ी तो होनी ही है। यथा राजा रानी..... आयु पूरी कर शरीर छोड़ते हैं। प्रजा

का भी ऐसे होता है; परन्तु पद का फर्क रहता है। तो अभी तुम बच्चों को सारे विश्व की, इस ड्रामा के चक्र की स्मृति आई है। इसलिए बाप तुमको कहते ही हैं स्वदर्शनचक्रधारी बच्चों। यह अलंकार तुम्हारे हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो। सिवाय तुम्हारे और कोई बन सके। अभी तमको सारा स्मृति में आता है। इस जन्म में हमने कितने पाप किये है। इसलिये बाबा कहते हैं वह सभी अविनाशी सर्जन के आगे रखो। तो हल्के हो जावेंगे। बाकी जन्म–जन्मान्तर के पाप जो सिर पर हैं उसके लिये योग में रहना है। योग से ही पाप कटेंगे और खुशी भी रहेगी। बाप की याद से ही हम सतोप्रधान बन यह बन जावेंगे। मालूम है हम याद से यह बनेंगे तो कौन याद नहीं करेगा; परन्तु यह भी युद्ध का मैदान है, मेहनत करनी पाड़ती है। इतना ऊँच पद पाने लिये मेहनत है। यह भी बच्चों को स्मृति आई कि हम बेहद के बाप से ही ऊॅच ते ऊॅच वरसा लेते है। कल्प–2 तुम ही लेते हो। तुम्हारे पास बहुत आवेंगे। आकर माहामंत्र लेंगे मनमनाभव का इतना अर्थ है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह है महामंत्र महान आत्मा बनने लिये। वह कोई महात्मा है नहीं। महात्मा वास्तव में कृष्ण को कहा जाता है। क्योंकि वह पवित्र है। भ्रष्टाचार से पैदा नहीं होता है। घड़ी–2 सन्यास नहीं धारण करते। यहाँ के सन्यासी भल पवित्र बनते हैं फिर भी विकार से ही पैदा होते हैं। देवताएँ तो सदैव पवित्र रहते हैं। देवताओं का है प्रवृति मार्ग। यह है निवृत्ति मार्ग के। स्त्रीयाँ तो धक्का खा न सके। यह भी अभी कलियुग में खराबियाँ हो गई हैं। स्त्रियों को सन्यासी बनाकर ले जाते हैं। फिर भी उन्हों की पवित्रता पर भारत थमा हुआ है। जैसे पुराने मकान को पोची आदि लगाई जाती है ना। तो जैसे कि नया बन जाता है। यह सन्यासी भी पोचे दे कुछ बचाव करते हैं; परन्तु बाप समझाते हैं वह धर्म ही अलग है। पवित्र बनते हैं। भारत खण्ड में ही इतने देवी–देवताओं के मंदिर, भक्ति आदि हैं। यह भी खेल है जिसका वृतान्त तुम बताते हो। भक्ति मार्ग के लिए यह सभी कुछ चाहिए ना। एक शिव के ही कितने नाम रख दिये हैं। नाम नाम पर मंदिर बनता रहता है। ढेर के ढेर मंदिर हैं। कितना खर्चा होता है फिर भी मिलता अल्पकाल का सुख है। बस। बहुत पैसे लगाते हैं। मूर्तियाँ टूट–फूट जाती है तो फिर बनाते हैं। वहाँ तो मंदिर आदि की दरकार ही नहीं। यह भी अभी स्मृति में आई है कि आधा कल्प भक्ति चलती है। आधा कल्प फिर भक्ति का नाम नहीं। बाप कितनी स्मृति दिलाते हैं इस वैरायटी झाड़ की। सिर्फ कलियुग की आयु ही 40 हजार वर्ष हो फिर तो क्रिश्चियन आदि की आयु भी बहुत बढ़ जाये। बाप समझाते हैं क्रिश्चियन धर्म की इतनी ही लिमिट है। यह जानते हैं क्राइस्ट को इतना समय हुआ। फलाना को इतना समय हुआ धर्म स्थापन किये। लेकिन फिर जावेंगे कब, यह पता नहीं है। कल्प की आयु ही लम्बी कर दी है। अभी तुम जानते हो यह तो विनाश की तैयारियाँ हो रही हैं। उन्हों की सांइस। तुम्हारा है सायलेन्स। तुम जितना सायलेन्स में जावेंगे उतना वह विनाश के लिए अच्छे चीज़ें तैयार करते रहेंगे। दिन–प्रतिदिन महीन चीज़ें बनाते रहते हैं। तुमको अन्दर में खुशी होती है। बाबा तो हमारे लिए नई दुनिया बनाने आये हैं। तो अभी हम पुरानी दुनिया में थोड़े ही रहेंगे। कमाल है बाबा! बाबा आपके स्वर्ग की स्थापना करने की तो कमाल है। अभी तुमको सारी स्मृति आई है। वह तो रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त को जानते ही नहीं। तुम जानते हो। तुम कितने रोशनी में हो। मनुष्य तो घोर–अंधियारे में हैं। फर्क है ना। ज्ञान अंजन सद्गुरु दिया अज्ञान अंधेर विनाश। भक्ति वाले ज्ञान को नहीं जानते। अभी तुम भक्ति को भी जानते हो तो ज्ञान को भी जानते हो। सारी स्मृति आई है भक्ति कब से शुरू होती है, फिर कब पूरी होगी। बाप कब ज्ञान देते, पूरा कब होगा सभी याद है। नम्बरवार तो हैं ही। किसको बहुत स्मृति है किसको कम। जिन्हों को बहुत स्मृति रहती है वह ऊँच पद पा लेंगे। स्मृति रहे तब औरों को भी समझावे। वन्डरफुल स्मृति है ना। आगे तुम्हारी बुद्धि में क्या था? भक्ति। जप–तप तीर्थ करना। माथा टेकना। सारी टिपर ही घीस गई। भक्ति की स्मृति और ज्ञान की स्मृति में कितना फर्क है।

तुम अभी भक्ति को भी अच्छी रीति जानते हो; क्योंकि शुरू से भक्ति की है। जानते हो हमने पहले–2 शिव की भक्ति की। फिर देवताओं की। और कोई को यह सिमरते नहीं हैं। तुमको रचना के आदि–मध्य–अन्त, भक्ति आदि सभी की स्मृति है। आधा कल्प भक्ति करते–2 गिरते ही आये हैं। अभी तो दुख के पहाड़ गिरने हैं। तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है यह दुख के पहाड़ से पहले ही हम याद की यात्रा से विकर्म विनाश करें। सभी को बहुत समझाते हो। तुम्हारे पास हजारों आते हैं। तुम मेहनत करते हो भाई–बहनों को रास्ता बताने। ज्ञान और भक्ति की स्मृति आई है गोया तुम सारी रचना के नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जान गये हो। जो जितना अच्छी रीति जानते हैं वह समझा भी सकते हैं। समझाना तो बच्चों को ही है। गायन भी है सन सोज़ फादर। बाप बच्चों को समझावेंगे, बच्चे फिर और भाइयों को समझावेंगे। आत्माओं को समझाते हो। भक्ति से यह ज्ञान बिल्कुल न्यारा है। गायन भी है एक भगवान आकर सभी भक्तों को फल देते हैं। एक बाप के सभी बच्चे हैं। बाप कहते हैं मैं सभी बच्चों को शान्तिधाम सुखधाम ले जाता हूँ कल्प–2। यह ज्ञान भी अभी तुमको है। वहाँ नहीं होगा। तुम पतित बने हो तो तुमको पावन बनाने लिए बाप तुम पर कितनी मेहनत करते हैं। इसलिए गायन है कुर्बान जाऊँ। वारी जाऊँ। किस पर? बाप पर। फिर बाप मिसाल बताते हैं यह कुर्बान कैसे गया। फालो इस सेम्पुल को करो। यही फिर लक्ष्मी–नारायण बनते हैं। अगर इतना ऊँच पद पाना है तो ऐसे कुर्बान जाना है। साहूकार कुर्बान हो न सके। यहाँ तो सभी स्वाहा करना पड़े। साहूकार को स्मृति जरूर आवेगी। गायन भी है ना अन्तकाल जो सिमरे..... इतने सभी पैसे कहाँ करेंगे। कोई लेगा ही नहीं; क्योंकि सभी खत्म हो जानी है। मैं भी लेकर क्या करूँगा। शरीर सहित सभी कुछ खलास हो जानी है। आप मुये तो मर गई दुनिया। यह धन आदि कुछ भी न रहेगा। बाकी गरुड़ आदि में तो रोचक बातें डाल दिया है डराने के लिए। बाप कहते हैं यह शास्त्र आदि सभी हैं भक्तिमार्ग के। आधा कल्प भक्तिमार्ग चलता है जब कि रावण–राज्य होता है। कोई से भी पूछो रावण कब से जलाते हो कहेंगे परम्परा से। अरे परम्परा से तो रावण होता ही नहीं। मालूम ही नहीं है तो कह देते हैं परम्परा से। अभी तुम बच्चों को स्मृति आई है रावण राज्य कब शुरू होता है। रचयिता और रचना की स्मृति आ गई है। अभी बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो पाप कटे। एक/दो को यही सावधानी देते रहो। घूमने आपस मे जाओ तो भी यह बातें। सारा झुण्ड तुम्हारा इस याद की यात्रा में चक्र लगाये तो तुम्हारा शान्ति का प्रभाव बहुत पड़ेगा। पादरी लोग भी बहुत साइलेन्स में जाते हैं क्राइस्ट की याद में। कोई तरफ देखते भी नहीं हैं। तुम तो यहाँ बहुत याद में रह सकते हो। कोई गोरखधंधा नहीं। बहुत अच्छा वायुमंडल है। बाहर में तो बहुत ही छी–छी वायुमंडल रहता है। इसलिए सन्यासियों के आश्रम भी दूर होते हैं। तुम्हारा तो है ही बेहद का सन्यास। पुरानी दुनिया अभी गई कि गई। यह कब्रिस्तान है। फिर परिस्तान सोने, हीरे–जवाहरों का बनेगा। यह परिस्तान के मालिक थे ना। अभी नहीं है। बाप कहते हैं मैं कल्प–2 कल्प के संगमयुग आता हूँ। यह सारा चक्र रिपीट होता रहता है। इस समय तुमको सभी स्मृति में है। जबकि बाप ने स्मृति दिलाई है। आगे कुछ भी बुद्धि में नहीं था। कृष्ण के 84 जन्मों की स्मृति बाप दिलाते हैं। तुम समझाते हो तो यह भक्त लोग लोग बिगड़ते हैं; क्योंकि वह तो कृष्ण को भगवान समझते हैं ना। जैसे बाप गाली खाते हैं तुम भी गाली खाते हो। बाप कहते हैं तुमने हमको बहुत गाली दी है। अब तुम भी खाओ। इस स्मृति के नशे में जब रहेंगे तो किसको खुशी से समझा भी सकेंगे। स्मृति में रहती है घर बार सम्भालना है। ज्ञान का सागर एक बाप है। शास्त्रों का ज्ञान कोई ज्ञान नहीं। वह भक्ति है। भक्ति अलग है, ज्ञान अलग है। भक्तिमार्ग में आधा कल्प धक्के खाने पड़ते हैं भगवान को मिलने लिए। फिर बाप ही आकर भक्ति का फल देते हैं। सभी को स्वर्ग में ले जाते हैं। तुम बच्चे जानते हो सुखधाम जाते हैं वाया शान्तिधाम। अच्छा मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

बाप और वरसा याद है? (अनोखेलाल)